17 फरवरी 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर
दोपहर 3 से 4 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 43, अंक : 22
फरवरी (द्वितीय), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

आरोन (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर जिनालय की 19वीं वर्षगाँठ के पावन अवसर पर दिनांक 31 जनवरी से 7 फरवरी तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल आरोन, जिनम् पाठशाला आरोन और सर्वोदय अहिंसा जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी के आमंत्रणकर्ता श्री आजादकुमारजी, अशोककुमारजी महोटी परिवार आरोन थे। साथ ही नवनिर्मित पंच बालयति जिनालय में नवनिर्मित वेदी पर महावीर भगवान, पार्श्वनाथ भगवान और मल्लिनाथ भगवान की विशाल अप्रतिष्ठित जिनप्रतिमा विराजमान की गई, जिसका पंचकल्याणक शीघ्र ही आयोजित होगा।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में ब्र. मनोजजी जबलपुर, पण्डित अशोकजी मांगुलकर एवं राघौगढ व गुना-आरोन के स्थानीय विद्वानों के सहयोग से हुये।

इस अवसर पर 'वीतरागता, सर्वज्ञता और हितोपदेशिता' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मंगल आशीर्वाद स्वरूप तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का उद्बोधन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटिल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित अरुणजी मोदी सागर, पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ' जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, ब्र. अमित भैया, पण्डित सुनीलजी शास्त्री, पण्डित विक्रांतजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

पाँच सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी का निर्देशन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, संयोजन अशोकजी मांगुलकर, अमनजी आरोन, संयमजी शास्त्री, अनुभवजी करेली, विदुषी प्रज्ञाजी, दीक्षाजी ने किया। तकनीकी संचालन में संजयजी शास्त्री जयपुर व विनीतजी हटा का योगदान रहा।

कार्यक्रम में अनेक विद्वानों एवं श्रेष्ठीगण सहित सैंकड़ों साधर्मीजनों ने यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर उपस्थित होकर लाभ लिया।

- अशोक कुमार जैन, अध्यक्ष-मुमुक्षु मंडल, आरोन

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

नौवाँ वार्षिक महोत्सव

(शुक्रवार, दिनांक 26 फरवरी से रविवार 28 फरवरी, 2021 तक)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में आयोजित **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का नौवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 26 फरवरी से 28 फरवरी, 2021 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

कार्यक्रम में स्थानीय साधर्मीजन टोडरमल स्मारक आकर एवं अन्य साधर्मीजन ऑनलाइन लाभ ले सकेंगे।

इस मंगल अवसर पर लाभ लेने हेतु आप सभी को भावभीना आमंत्रण है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - **www.vitragvani.com**
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब **vitragvani** एप पर भी उपलब्ध है।

(13) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

द्वितीय अध्याय का सार (संसार अवस्था का स्वरूप)

(गतांक से आगे...)

आठ कर्मों की उदयजन्य अवस्था –

फिर प्रश्न उठाया कि एक काल में यदि एक ही विषय का जानना-देखना होता है, तो क्षयोपशम भी उतना ही कहो, आप ऐसा क्यों कहते हो कि क्षयोपशम से जानने की शक्ति तो बहुत थी, लेकिन जान नहीं पा रहा था? क्योंकि शक्ति तो केवलज्ञान की भी है।

समाधान करते हुए कहा कि किसी पुरुष में बहुत गांव गमन करने की शक्ति है, किन्तु उसे किसी ने रोककर कहा कि तुम सिर्फ पांच ही गांव जाओ, उसमें भी रोजाना एक-एक गांव ही जाना है। इसप्रकार उसकी वास्तविक शक्ति तो बहुत गांव जाने की है, पर वर्तमान में पांच गांवों में जाने की ही प्रकट योग्यता है, उसमें भी एक दिन में एक ही गांव में जा सकता है।

उसीप्रकार जीव के शक्ति तो इतनी पायी जाती है कि लोकालोक को जान ले, किन्तु कर्मोदय के कारण जितना क्षयोपशम हो उतना ही जान पाता है, उसमें भी पांचों इन्द्रियों से एक साथ नहीं जान पाता, अपितु एक बार में एक ही इन्द्रिय से जानना हो सकता है।

ज्ञानावरण दर्शनावरण के उदय से इस जीव के पराधीनता बहुत पायी जाती है। उदय के निमित्त से ज्ञान-दर्शन के बहुत अंशों का तो अभाव ही है और क्षयोपशम से ज्ञान-दर्शन का थोड़ा बहुत सद्भाव पाया जाता है, उसमें भी पराधीनता बहुत है।

अब **मोहनीय कर्म** के उदय से होने वाली जीव की अवस्था को बताते हैं – विचार करना! हमारी यह अवस्था हो रही है या नहीं? क्या हमें मिथ्यात्व और कषायभाव होते हुए दिखायी देते हैं? दर्शनमोह के उदय में ऐसा होता है कि शरीर और आत्मा दोनों अलग-अलग भासित नहीं होते; एक ही दिखते हैं। इसका उदय होने पर जैसा है वैसा तो मानता नहीं है, जैसा नहीं है वैसा मानता है।

यहाँ पण्डितजी ने बहुत सुन्दर भेदविज्ञान कराया है। उनके मूल शब्द इसप्रकार हैं – 'अमूर्तिक प्रदेशों का पुंज, प्रसिद्ध ज्ञानादि गुणों का धारी, अनादि-निधन वस्तु आप है, और मूर्तिक पुद्गल द्रव्यों का पिण्ड, प्रसिद्ध ज्ञानादि से रहित है, इसका नवीन संयोग हुआ है, ऐसे शरीरादि पुद्गल पर हैं।'

मनुष्य-तिर्यंच आदि पयायों में शरीर और आत्मा का भेदविज्ञान किया जाना चाहिये, किन्तु दर्शनमोह हावी होता है, तब सभी पर्यायों को मिलाकर उनको अभेदरूप एक मानता है। ऐसी बुद्धि होती है कि यही मैं हूँ... मैं कितना गोरा हूँ... मैं मोटा हो गया... मैं पतला हूँ... ये सब मेरी ही अवस्थाएं दिखती हैं – कुछ भेदविज्ञान नहीं करता।

वास्तविकता यह है कि अपनी पर्याय में जो ज्ञानादि हैं, वे तो अपने हैं, रागादि हैं वे विभाव भाव हैं तथा वर्णादिक दिखायी देते हैं, ये सब शरीर की अवस्थाएं हैं। इन्हें भिन्न-भिन्न जानो, इसके बिना काम नहीं चलेगा; किन्तु यह धन-कुटुम्ब आदि का संबंध होने पर उन्हें अपना मानता है, उनमें प्रीति करता है, तन्मय हो जाता है – ये सब दर्शनमोह की अवस्थाएं हैं, ये बीमारी है दर्शनमोह की।

अब चारित्रमोह के उदयजन्य अवस्थारूप बीमारी की चर्चा करते हुए क्रोध, मान, माया, लोभ तथा हास्यादि कषायों में इस जीव की क्या-क्या अवस्थाएं होती हैं – यह बताते हैं।

जब इस जीव के चारित्र मोहनीय की क्रोध आदि प्रकृतियों का उदय होता है, तब यह परपदार्थों को इष्ट-अनिष्ट मानकर क्रोधादि कषायें करता रहता है। पण्डितजी ने यहाँ कषाय-नोकषाय के उदयजन्य परिस्थितियों का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

जब इसके क्रोध का उदय आता है, तब परपदार्थों को अनिष्ट मानकर उनका बुरा चाहता है। इसीप्रकार जब मान का उदय होता है, तब पर को अनिष्ट मानकर उन्हें नीचा दिखाना चाहता है। जब माया कषाय का उदय होता है, तब पदार्थ को इष्ट मानकर छल द्वारा कार्यसिद्धि चाहता है। जब लोभ का उदय होता है, तब पदार्थों को इष्ट मानकर उन्हें प्राप्त करना चाहता है। आपने ध्यान दिया होगा, क्रोध और मान की चर्चा करते हुए अनिष्ट शब्द का प्रयोग किया, क्योंकि वे द्वेषरूप कषायें हैं, जबकि माया व लोभ की चर्चा करते हुए इष्ट शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि ये रागरूप कषायें हैं।

पण्डित टोडरमलजी ने यहाँ भेदविज्ञान के लिये चार ब्रह्म वाक्य दिये हैं। चारों कषायों से होने वाली अवस्थाओं का वर्णन एक-एक पैराग्राफ में करने के उपरांत नीचे एक कॉमन लाइन दी है, शब्द बदल-बदल करके...जो गहराई से विचारणीय है।

उन्होंने लिखा – ...क्रोध से बुरा चाहने की इच्छा तो हो, बुरा होना **भवितव्य** आधीन है...मान से अपनी महन्तता की इच्छा तो हो, महन्तता होना **भवितव्य** आधीन है...माया से इष्टसिद्धि के अर्थ छल तो करे, परन्तु इष्टसिद्धि होना **भवितव्य** आधीन है...लोभ से इष्ट प्राप्ति की इच्छा तो हो, परन्तु इष्ट प्राप्ति होना **भवितव्य** के आधीन है।

इस तरह सिद्ध होता है कि कार्य कषायों से नहीं होता, हमारी इच्छानुसार भी नहीं होता - ये सब चारित्र मोह के उदयजन्य अवस्था है, इससे चाहा हुआ नहीं होता।

फिर अनंतानुबंधी आदि की परिभाषाएं बताते हैं कि सम्यक्त्व का घात करे वह अनंतानुबंधी, देशचारित्र का घात करे वह अप्रत्याख्यानावरण, सकल चारित्र का घात करे वह प्रत्याख्यानावरण तथा सकल चारित्र में दोष उत्पन्न करे व यथाख्यात चारित्र उत्पन्न नहीं होने देवे, उसका नाम संज्वलन। ध्यान दें, अनादि संसार अवस्था में अनंतानुबंधी आदि चारों का उदय निरंतर पाया जाता है। यहाँ एक महत्वपूर्ण बात नोट करने योग्य है कि कषायों की तीव्रता और मंदता के आधार पर ये अनंतानुबंधी आदि भेद नहीं हैं; सम्यक्त्वादि के घात की अपेक्षा है। तीव्रता और मंदता के आधार पर जो भेद पड़ते हैं, उसका नाम तो लेश्या है।

फिर हास्यादि छह और तीन वेद के उदय में होने वाली अवस्था को अत्यंत संक्षेप में बताया। इसप्रकार मोह के उदय से मिथ्यात्व और कषाय भाव होते हैं, सो यही संसार के मूल कारण हैं, ये जीव इन्हीं से दु:खी है।

इस जीव के **अंतराय कर्म** का उदय आने पर जैसा चाहता है वैसा होता नहीं। हम चाहते कुछ और हैं तथा होता कुछ और ही है। पण्डितजी कहते हैं कि यह अन्तराय कर्म के उदयरूप बीमारी की अवस्था है। दान देने की इच्छा होने पर भी नहीं दे पाए, लाभ प्राप्ति की इच्छा हो, पर लाभ नहीं हो पाए, भोगने की इच्छा हो, पर भोग नहीं पाए। चाहा हुआ नहीं होता, यह अन्तराय कर्म का उदय है। कदाचित् क्षयोपशम से किंचित् चाहा हुआ भी हो जाता है।

अब **वेदनीय कर्म** के उदयजन्य तीन प्रकार की परिस्थिति बनती है - एक तो शरीर की निरोगी या रोगीरूप अवस्था, दूसरी शरीर की अवस्था में सुख-दु:ख के कारण, तीसरी शरीर की अवस्था से कोई संबंध नहीं है - ऐसे बाह्य पदार्थों का संबंध होना। परन्तु विशेष बात यह है कि उनमें सुखी-दु:खी होना मोह के आधीन है, संयोगों के आधीन नहीं है।

आगे बहुत सुन्दर-सुन्दर तर्क दिये हैं, जैसे दो जीवों को एक जैसी वस्तु मिलने पर भी एक सुखी होता है और एक दु:खी। इसमें साता-असाता वेदनीय कर्म के उदय का निमित्त होने पर भी सुख-दु:ख का मूल बलवान कारण मोह का उदय ही है। मोह के उदय से यह जीव सुखी-दु:खी होता है, संयोगों के मिलने-बिछुड़ने से यह जीव सुखी-दु:खी नहीं होता। ध्यान रहे! वेदनीय कर्म के उदय से सामग्रियाँ तो मिल गईं, पर उन सामग्रियों के मिलने से सुखी-दु:खी होने का संबंध रंचमात्र भी नहीं है।

तथा एक **आयुकर्म** है, इसके उदय से मनुष्य आदि पर्यायों की स्थिति रहती है। जन्म-जीवन-मरण का कारण आयुकर्म ही है। यदि इस जीव के आयु कर्म शेष है, तो कोई दूसरा जीव उसको मार नहीं सकता। हजारों बीमारियाँ आकर घेर लेवे, तो भी आयुकर्म पूरा हुए बिना मरण नहीं होता। आयु कर्म के रहने से शरीर की अवस्था दिखाई देती है। आयुकर्म पूरा हो जाने पर बचाने में कोई समर्थ नहीं होता और आयुकर्म बचा होने पर दुनिया की कोई ताकत मारने में समर्थ नहीं होती। जिसप्रकार वस्त्र का बदलना होता है, उसीप्रकार आयु कर्म समाप्त हो जाने पर यह जीव नया शरीर धारण करता है।

इसीप्रकार **नामकर्म** के उदयजन्य अवस्था को बताते हुए पण्डितजी कहते हैं कि गति, जाति, इन्द्रियाँ मिल गई, शरीर सुन्दर-बदसूरत मिल गया, यश-अपयश की परिस्थितियाँ, श्वासोच्छवास, स्वर आदि ये सब नामकर्म के उदय से होते हैं। चाहते हुए भी अच्छा क्यों नहीं बोल पा रहे हैं? आवाज क्यों बिगड़ गयी है? समाज में बहुत काम करते हुए भी यश-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान क्यों नहीं मिल रहा है? इन सबके पीछे नामकर्म का उदय ही कारण है।

शरीर और आत्मा के इस नामकर्मजन्य बंधन के संदर्भ में इकदण्डी बेड़ी का उदाहरण देकर बात कही है, जैसे दो व्यक्तियों को एक बेड़ी एकसाथ बांध दी गई हो तो एक के साथ दूसरा भी खिंचा चला जाता है, एक को रोक दो तो दूसरा भी रुक जाता है। किसी व्यक्ति ने मेरा शरीर पकड़ लिया, तो आत्मा भी पकड़ में आ जाता है, वह इधर-उधर नहीं जा सकता। कभी आत्मा की कहीं जाने की इच्छा हो, लेकिन शरीर नहीं जा पाता, इसलिये आत्मा को भी वहीं रहना पड़ता है।

इसप्रकार नामकर्म के उदयजन्य परतंत्र अवस्था भी यहाँ देखी जाती है। पण्डितजी यहाँ कहते हैं कि इसके उदय से होने वाली नाना अवस्थाओं में भी कोई किसी को करता नहीं है, निमित्त-नैमित्तिक संबंध से ही काम होता है।

गोत्र कर्म के उदयजन्य अवस्था में नीच या उच्च कुल की प्राप्ति होती है, जिससे अपनी हीनता अथवा उच्चता मानता है और मोह से दु:खी होता है।

इसप्रकार सभी कर्मोदयजन्य परिस्थितियों को बताते हुए पण्डितजी ने मोह को ही दु:ख का कारण बताया है।

अब अधिकार का समापन करते हुए लिखा कि हे भव्य! अपने अंतरंग में विचारकर देख कि ऐसे ही है कि नहीं। विचार करने पर ऐसा ही प्रतिभासित होता है। यदि ऐसा है तो तू यह मान कि मेरे अनादि संसार रोग पाया जाता है, उसके नाश का मुझे उपाय करना, इस विचार से तेरा कल्याण होगा।

इसप्रकार पण्डितजी ने इस दूसरे अधिकार में हमारे अनादिकालीन संसाररूपी रोग की सिद्धि की है। ●

मुनिवराष्टक स्तोत्र

(कविवर पण्डित भागचन्दजी, ईसागढ़ की आध्यात्मिक रचनाओं से सहज प्रेरणा पाकर हिंदी एवं संस्कृत मिश्र भाषा में निर्मित)

(छन्द-पंच चामर)

सुधीर वीर रूप शान्त-तेज मे मुनीश्वरं।
धरा दिगम्बरत्व, सत्व मात्र मित्रतापरं।।
निजात्म चित्स्वभाव भाव लीयते च तृष्यते।
स एव दीयते जनान् विवेच्यते च तर्प्यते।।

अखण्ड शुद्ध आत्म में विचर्यते प्रतिक्षणं।
निजात्म सौख्य भोग भोगते परं क्षणं क्षणं।।
सुसाम्य भाव धार सर्व सौख्य मेघ गर्जते।
वने भ्रमन्ति दिग्दिगंत कीर्तिमान जायते।।1।।

घमण्ड क्रोध दम्भ लोभ धर्म शस्त्र मर्दनं।
क्षमा अमान आर्जवं सुशौच राष्ट्र वर्द्धनं।।
सराग-दाह-मोह अंधकार किट्ट कालिमा।
विनष्ट सर्व दीप्त मारतण्ड ज्ञान लालिमा।।

विशुद्ध बोध नास्ति दोष राजते त्रिविभ्रमं।
उदारता हिलोल सच्चरित्र अम्बरं समं।।
सु-स्याद्वाद छान ज्ञान अमृतं सदा पिबं।
सुधर्म भाव सिंधु तैर ईष्यते सदा शिवं।।2।।

समग्र थूल सूक्ष्म जन्तु ना कदापि छिद्यते।
न चिंत्यते न उच्यते न यत्यतेऽनुमोद्यते।।
विभीति कोप हास्य लोभ सत्यवाद बाध्यते।
चतुर्मृषा प्रदह्यते स्व-सत्स्वभाव साध्यते।।

अदत्त नैव गृह्यते न वारि ना रजो-मृदा।
कुकार्य त्याग सर्वथा अचौर्य वर्तते सदा।।
विरक्ष्यते स्वशील यत्कदापि ना तु मुच्यते।
रति-प्रहार रक्षकः सु-ब्रह्मचर्य रुच्यते।।3।।

अधीन अक्ष आश्रितं जगत् सुखं तु इन्द्रियं।
दिगम्बरेण पीयते सु-अमृतं अतीन्द्रियं।।
मृदूनि मंजुरी समान वर्तते क्वचित्कचित्।
कठोर वज्रधातु सन्त वर्तते क्वचित्कचित्।।

द्विरेफ वृत्ति साध ग्राम ग्राम भोज गृह्यते।
क्षुधा तृषा परीषहोपसर्ग साम्य सह्यते।।
प्रवर्षतु प्रचण्ड पौष ठण्ड सूर्य भ्राजते।
सुशम्यते समस्त दुःख आत्म में विराजते।।4।।

निरीह वीतराग निष्कलंक हे तपोधनं।
निशंक निर्भयात्मनः निवास निर्जनं वनं।।
प्रवास-शून्यगेह, दिग्पटः, क्षमा-प्रियतमा।
तप-प्रभोज, तोष-वित्त, सौख्यमंतरातमा।।

स्फुटत्दिगंत ते प्रभा यथावतारमीश्वरं।
समस्तदेवलोक पूज्यते महा मुनीश्वरं।।
प्रमोद रूपमद्भुतं प्रफुल्ल देख मे मुखं।
गुण प्रवाह पश्य वर्धते निजस्थले सुखं।।5।।

अराति-मित्र, रङ्क-राजपूत, काँच-कांचन।
अनिष्ट-इष्ट बुद्धि न प्रवर्तते कदाचन।।
प्रदह्यते च त्रायते च स्तुत्य-निंद्य वाचन।
अनिष्ट-इष्ट बुद्धि न प्रवर्तते कदाचन।।

महापिशाच कर्मजा भवन्ति पुण्य पापन।
अनिष्ट-इष्ट बुद्धि न प्रवर्तते कदाचन।।
अकाल-सौम्यकाल वर्ततेऽनुरूप कानन।
अनिष्ट-इष्ट बुद्धि न प्रवर्तते कदाचन।।6।।

शनैः शनैः तु प्राप्यते वरं गतिं सुनिष्कलम्।
तवोपदेश यान्ति शुद्धताम् जनाः तु निर्मलम्।।
मुहुर्मुहुर्मुहुर्मुहुर्विचर्यते उपास्यते।
अवश्यमेव मङ्गलं स्वसिद्धरूप ध्यायते।।

क्षणं क्षणं स्मरेत् विशाल मुक्तिमार्गनायकः।
मया शिरेण नम्यते सदा प्रमोददायकः।।
प्रतीक्षते सदा निधि त्रिरत्न हे ऋषीश्वरं।
नमाम्यहम् भजाम्यहं ललाम हे मुनीश्वरं।।7।।

सुजैन सन्त मुक्तिकन्त साधवे नमाम्यहम्।
विराजमान मस्तके पुनः पुनः भजाम्यहम्।।
निजात्मनि प्रवर्तते मुहुर्मुहुर्भजाम्यहम्।
विराजमान मस्तके पुनः पुनः नमाम्यहम्।।

विमुक्तिसंगिनी महान साधवे भजाम्यहं।
विराजमान मस्तके पुनः पुनः नमाम्यहम्।।
दिगम्बराय मोक्षमार्ग प्राप्तये भजाम्यहं।
विराजमान मस्तके पुनः पुनः नमाम्यहम्।।8।।

मुनिवराष्टकं स्तोत्रं प्राप्तुं साधुपदं वरं।
प्रथायाम् भागचंद्रस्य समकितेन विनिर्मितं।।

– समकित जैन, ईसागढ़
(शास्त्री द्वितीय वर्ष)

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय–8 (उपदेश का स्वरूप)

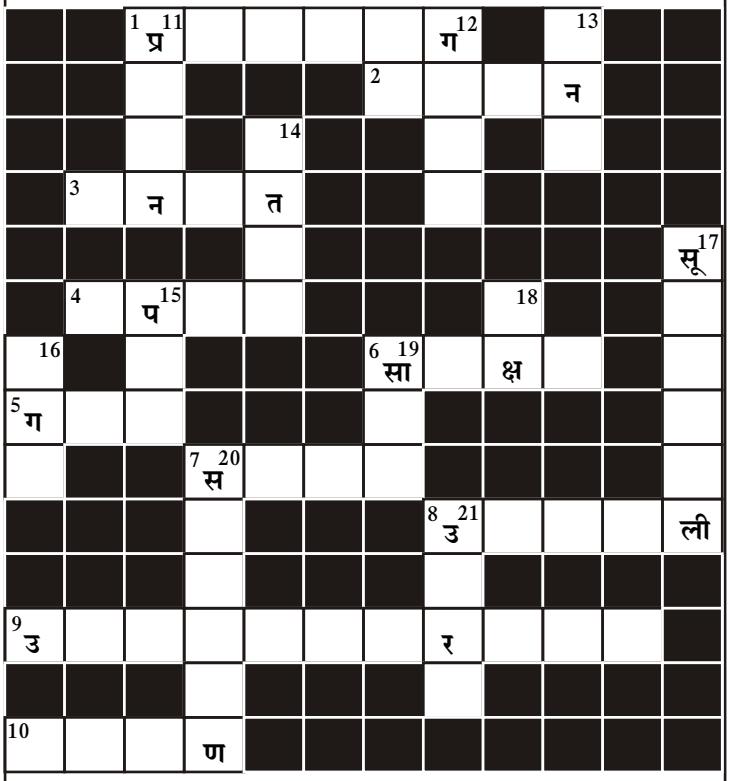

बाएं से दाएं –

1. महान पुरुषों के चरित्र का जिसमें निरूपण हो (6)
2. करणानुयोग में वर्णित (4)
3. चार अनुयोगों द्वारा उपदेश किसमें है (4)
4. दर्शन शब्द का अर्थ सामान्य स्वरूप ग्रहण मात्र कहाँ होता है (4)
5. करण का अर्थ होता है (3)
6. जिनवचनों में स्यात् पद की क्या होनी चाहिये (4)
7. जिनवचनों में किसके द्वारा रमना है (4)
8. वहाँ ऊपर के निषेकों का द्रव्य ..... में दिया जाये उसका नाम उदीरणा है (5)
9. आज्ञानुसार उपदेश देने वाले का क्रोध भी क्षमा का भण्डार है – यह कथन किस ग्रंथ का है (11)
10. किनका अभ्यास होने पर अनुयोगरूप शास्त्रों का अभ्यास हो सकता है (4)

ऊपर से नीचे –

11. सर्वप्रथम अनुयोगों का क्या जानना (4)
12. उपदेश देने जैसा कार्य किसके उपकार समान है (4)
13. मिथ्यात्व और तपरूप है (3)
14. परमेश्वर तो ..... हैं (4)
15. शास्त्र हैं तो मुख्यरूप से किसके अभ्यास योग्य हैं (3)
16. व्यंतरों के द्वारा ..... आदि जलाने पर भी पीतलेश्या ही होती है (3)
17. लक्ष्मी को कमलवासिनी जिस ग्रंथ में कहा वह ..... (6)
18. छः महीने आठ समय में 608 जीवों को ही ..... होता है (2)
19. आत्मज्ञान बिना धर्म का क्या नहीं हो सकता (3)
20. जिनदेव की विभूति जिसकी रचना देव करते हैं (6)
21. दसकरणों में देवायु में ..... करण कहा है (4)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

ऑनलाईन निजात्मकेलि जिनश्रुत रत्नकरण्ड श्रावकाचार गोष्ठी/शिविर एवं व्याख्यानमाला संपन्न

ज्ञानचेतना ट्रस्ट दिल्ली एवं जैनिज्म थिंकर संस्थान के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिल्ली के सहयोग से अजितनाथ भगवान और शांतिनाथ भगवान के ज्ञान कल्याणक दिवस के पावन अवसर पर दिनांक 22 से 26 जनवरी तक ऑनलाइन निजात्मकेलि जिनश्रुत रत्नकरण्ड श्रावकाचार गोष्ठी/शिविर एवं व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। प्रात:काल जिनेन्द्र पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन हुये।

इस अवसर पर पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित जे.पी.दोशी मुम्बई, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, ब्र. अमित भैया विदिशा, विदुषी राजकुमारी जैन सनावद, डॉ. सुरभि जैन खंडवा, श्रीमती अर्चना जैन ग्वालियर आदि का समागम प्राप्त हुआ। दिनांक 26 जनवरी के अवसर पर विशेष व्याख्यान पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा हुआ।

पूजन का कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा किया गया। शिविर के सूत्रधार श्री नीरज जैन एवं निर्देशक पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई थे।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री वीनू आर. शाह मुम्बई, ध्वजारोहणकर्ता श्री अनिल–ज्योतिजी जैन उज्जैन, मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री पदमजी पहाड़िया परिवार इंदौर, सह–आमंत्रणकर्ता श्रीमती सरोज जैन सुनील जैन एर्नाकुलम केरल और शिविर उदघाटनकर्ता श्री संजय–भावना जैन परिवार दिल्ली थे।

समापन समारोह में सभा के अध्यक्ष डॉ. मुकेशजी तन्मय विदिशा थे। सभा में पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी नागपुर, पण्डित अजितजी अलवर, डॉ. अनेकान्तजी दिल्ली आदि विद्वत्गणों के अतिरिक्त श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री राजू शाह अहमदाबाद, श्री अजीतजी बड़ौदा, श्री सुधीरजी परिवार कटनी आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। सभा का मंगलाचरण विदुषी भव्या जैन दिल्ली ने एवं संचालन पण्डित ज्ञाता झांझरी सूरत ने किया।

शिविर के समन्वयक श्री सुमित जैन बड़ौत थे एवं आई.टी. टीम में दीपम जैन खतौली, स्वप्निल जैन सिवनी, संस्कार जैन अहमदाबाद व मुस्कान सर्राफ सागर का सहयोग प्राप्त हुआ।

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर वाट्सअप पर ही भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 10 मार्च 2021 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

वाट्सअप पर भेजने हेतु –9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

6 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 60 – काम-भोग-बन्ध कथा का यह विसंवाद मिटे कैसे?

उत्तर – एकत्व-विभक्त आत्मा की चर्चा से यह विसंवाद मिटता है।

प्रश्न 61 – कामकथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – स्पर्शन और रसना इन्द्रिय के विषयों की कथा को कामकथा कहा है।

प्रश्न 62 – भोग कथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – घ्राण, चक्षु एवं कर्ण - इन तीनों इन्द्रियों के विषय की कथा को भोग कथा कहा है।

प्रश्न 63 – बन्ध कथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – चार प्रकार के बन्ध व उनके फल में प्राप्त होने वाली नरकादि गतियों तथा गुणस्थानादिरूप संसारी पर्यायों की कथा को बन्ध कथा कहा है।

प्रश्न 64 – चार प्रकार के बन्ध कौन-कौनसे हैं?

उत्तर – प्रकृति बन्ध, प्रदेश बन्ध, स्थिति बन्ध और अनुभाग बन्ध - ये चार प्रकार के बन्ध हैं।

प्रश्न 65 – अज्ञानी की दुर्दशा का चित्र आचार्य अमृतचन्द्र ने अपनी टीका में किस प्रकार खींचा है?

उत्तर – अज्ञानी की दुर्दशा का चित्र खींचते हुए आचार्यदेव कहते हैं कि यह लोक संसाररूपी चक्की के पाटों के बीच अनाज के दानों के समान पिस रहा है। मोहरूपी भूत हमें पशुओं की भांति जोत रहा है, तृष्णारूपी रोग से जल रहा है, मृगतृष्णा में फंसकर मृग की भांति भटक रहा है - इसप्रकार पंचेन्द्रियों के विषयों में उलझा हुआ यह जीव परस्पर आचार्यत्व भी करता है। अर्थात् लोग विषय-कषाय की चतुराईयाँ एक-दूसरे को बताते हैं, सिखाते हैं। जैसे - पैसा कैसे कमाना? उसे कैसे भोगना? आदि बातों को जगत को बताते हैं, उन्हीं कार्यों को करने की प्रेरणा भी देते हैं।

प्रश्न 66 – स्पष्ट प्रकाशमान अनुभव में आने वाला आत्मा तिरोहित क्यों हो रहा है?

उत्तर – स्पष्ट प्रकाशमान आत्मा अनादिकालीन अज्ञान के कषायचक्र के साथ एकरूप किये जाने से तिरोहित हो रहा है।

प्रश्न 67 – अनादिकालीन अज्ञान का नाश कैसे होगा?

उत्तर – एकत्व-विभक्त (त्रिकाली ध्रुव भगवान) आत्मा को समझकर, उसमें अपनापन स्थापित करने से अनादिकालीन अज्ञान का नाश होता है।

प्रश्न 68 – एकत्व-विभक्त आत्मा को दिखलाने की प्रतिज्ञा किन आचार्य ने किस गाथा में की है?

उत्तर – आचार्य कुन्दकुन्द ने गाथा 5 में की है।

प्रश्न 69 – आचार्य कुन्दकुन्द का वैभव क्या था, कैसा था और कैसे उत्पन्न हुआ था?

उत्तर – आचार्य कुन्दकुन्द का वैभव ज्ञान वैभव था, जो मुक्तिमार्ग के प्रतिपादन में पूर्णत: समर्थ था। वह ज्ञान वैभव जिनागम का अभ्यास कर सद्गुरुओं के मुख से उसके मर्म सुनकर, तर्क की कसौटी पर कसकर और अनुभव करके उत्पन्न हुआ था।

प्रश्न 70 – समयसार का आधार क्या है? क्या वह काल्पनिक है?

उत्तर – नहीं, समयसार काल्पनिक नहीं। उसका आधार द्वादशांग जिनवाणी का सार और भगवान महावीर की दिव्यध्वनि का सार है।

प्रश्न 71 – आचार्यदेव के अनुसार समयसार को कैसे प्रमाणित करना चाहिए? यह कहकर वे क्या कहना चाहते हैं? अथवा प्रेरणा देना चाहते हैं?

उत्तर – आचार्यदेव के अनुसार समयसार को अपने अनुभव से प्रमाणित करना चाहिए। यह कहकर आचार्यदेव पाठकों को स्वानुभव करने की प्रेरणा देना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि समयसार को प्रमाणित करने के नाम पर ही सही, पर एक बार स्वानुभव करने का प्रयास तो अवश्य करें।

प्रश्न 72 – 'छल ग्रहण नहीं करना' कहकर आचार्यदेव क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर – 'छल ग्रहण नहीं करना' कहकर आचार्यदेव पाठकों को हल्की सी डांट पिला रहे हैं कि गलती निकालने में ही अपनी बुद्धि का उपयोग न करना। अक्षर-मात्रा की चूक पर ध्यान मत देना, भाव को समझकर आत्मानुभव करने का प्रयास करना।

प्रश्न 73 – 'एकत्व' से क्या तात्पर्य है? अथवा एकत्व किसे कहते हैं?

उत्तर – स्व से अभेद को एकत्व कहते हैं अर्थात् अनन्त गुणों का अखण्ड पिण्ड, असंख्यात प्रदेशों का अखण्ड पिण्ड आत्मा गुणभेद और प्रदेशभेद से रहित है। आत्मा स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव से अखण्ड है, अभिन्न है - यही एकत्व है।

प्रश्न 74 – विभक्त से क्या तात्पर्य है? या विभक्त किसे कहते हैं?

उत्तर – पर से भेद को विभक्त कहते हैं अर्थात् द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म अथवा पर और पर्याय से जुदा होना विभक्त है। अपनी मान्यताओं में पर का प्रवेश न होना पर से संबंध न होना विभक्त है।

यही है ध्यान... यही है योग...

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

अपनेपन के साथ ही निज आतम का ज्ञान।
रमो जमो बस यही है निज आतम का ध्यान।। १ ।।

(रेखता)

अरे निज आतम को पहिचान आतमा में अपनापन करें।
अरे अपने आतम को जान उसी में अपनेपन से जमे।।
यही है निश्चय सम्यग्दर्श यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान।
रतनत्रय शामिल हो जाते करो यदि इक आतम का ध्यान।। २ ।।

काय चेष्टा कुछ भी मत करो और कुछ भी ना बोलो बोल।
और ना कुछ भी सोचो भाई! एक आतम में रमो अमोल।।
यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान यही है निश्चय सम्यक् ध्यान।
यही है परम शुद्ध उपयोग यही है अद्भुत कार्य महान।। ३ ।।

यही है परम समाधीयोग यही है परमतत्व की लब्धि।
यही है आतम की संवित्ति यही है आतम की उपलब्धि।।
यही है परम भक्ति का भाव यही है निर्विकल्प आनन्द।
यही है परम समरसीभाव यही है परमशुद्ध आनन्द।। ४ ।।

यही है परम शुद्धचारित्र यही है स्वसंवेदन ज्ञान।
यही है स्वस्वरूप उपलब्धि यही है परमशुद्ध विज्ञान।।
यही है दिव्यध्वनि का सार यही है परमतत्त्व का बोध।
जगत में इसके बिन कुछ नहीं यही एकाग्र चित्त का रोध।। ५ ।।

यही एकाग्रचित्त का रोध यही है अपनेपन का बोध।
यही है उपयोगी उपयोग यही है योगिजनों का योग।।
इसी को कहते हैं सब लोग मिला है यह अद्भुत संयोग।
स्वयं को जानो मानो जमो यही है परमतत्त्व का बोध।। ६ ।।

स्वयं को जानो, जानो नहीं जानना होने दो तुम सहज।
जानने का तनाव मत करो जानते रहो निरन्तर सहज।।
अरे करने-धरने का बोझ उतारो हो जावो तुम सहज।
जानने के तनाव से रहित जानना होने दो तुम सहज।। ७ ।।

जानना होने दो तुम सहज जानने के विकल्प से पार।
और तुम हो जावो निर्भार भाड़ में जानो दो तुम भार।।
भाड़ में जाने दो तुम भार करो तुम अपने में निर्धार[१]।
यदि बनना चाहो भगवान उन्हीं-से हो जावो निर्भार।। ८ ।।

उन्हीं-से[२] हो जावो निर्भार उन्हीं-से हो जावो निर्ग्रन्थ।
चाहते हो तुम भव का अंत शीघ्र ही छोड़ो जग का पंथ।।
सहजता जीवन का आनन्द यही है परमागम का पंथ।
चलो तुम परमागम के पंथ शीघ्र आवेगा भव का अंत।। ९ ।।

शीघ्र आवेगा भव का अन्त प्रगट होगा आनन्द अनन्त।
ज्ञान-दर्शन भी होंगे नंत वीर्य भी होगा अरे अनन्त।।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अरे भोगोगे काल अनन्त।। १०।।

(दोहा)

महिमा आतमध्यान की जिसका आर न पार।
आतम आतम में रमे हो जावे भव पार।। ११ ।।

१. सोच समझकर निश्चित करना। २. उनके समान ही।

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

सन्मति संस्कार संस्थान, कोटा के नवीन भवन का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक 30 जनवरी से 1 फरवरी तक तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान, प्रवचनसार मंडल विधान एवं 24 तीर्थङ्कर मंडल विधानपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में प्रवचनसार मोक्षमार्ग प्रज्ञापन अंतराधिकार के आधार पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, ब्र. अमितभैया विदिशा आदि 12 विद्वानों के वक्तव्य का लाभ मिला। प्रतिदिन दोपहर को डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा अहिंसक चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें बिना औषधि स्वास्थ्य रक्षा की विधियाँ जैन चरणानुयोग के अनुसार प्रतिपादित की गईं। शिविर में आत्मार्थी एवं शाश्वतधाम की बालिकाओं द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन हुआ।

त्रिदिवसीय गोष्ठी के संयोजक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर एवं संचालक पण्डित चेतनजी जैन कोटा एवं विदुषी श्रुति जैन जयपुर थे। सभी कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन द्वारा संपन्न कराये गये। कार्यक्रम में सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया।

ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्वालियर के तत्त्वावधान में दिनांक 7 फरवरी को चार गति का स्वरूप (छहढाला के आधार पर) विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई ने की।

इस अवसर पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री पुणे, विदुषी तापसी शास्त्री मुम्बई ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण स्वस्तिक जैन फालका बाजार ने किया। तकनीकी सहायता संचित शास्त्री व सांची जैन मुरार द्वारा प्राप्त हुई। समस्त कार्यक्रम का प्रसारण यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर किया गया।

शोक समाचार

(1) चंदेरी (म.प्र.) निवासी श्री महेन्द्रकुमारजी बंसल (पूर्व मण्डल अध्यक्ष भाजपा, चंदेरी) का दिनांक 9 फरवरी को 93 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप 1980 से 1993 तक भाजपा मण्डल अध्यक्ष तथा 1977 में विशेष क्षेत्र प्राधिकरण साडा के डायरेक्टर रह चुके हैं। राजमाता विजयाराजे सिंधिया के अनन्य समर्थक रहे बंसल ने पूर्व मुख्यमंत्री वीरेन्द्र सखलेचा, कैलाश जोशी, सुंदरलाल पटवा, कल्याण सिंह आदि के साथ भाजपा को मजबूत बनाने में महती भूमिका निभाई है। ज्ञातव्य है कि आप समन्वयवाणी के सम्पादक श्री अखिलजी बंसल के पिताजी थे।

(2) मुम्बई निवासी श्रीमती शारदाबेन शांतिलाल शाह का दिनांक 5 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की अनन्य भक्त थीं। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में भी आपका बहुत सहयोग रहता था। आपका परिवार टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के शिरोमणि संरक्षक भी है। ज्ञातव्य है कि आप श्री अनंतभाई ए. शेठ की बहिन एवं श्री नेमिषभाई शाह की माताजी थीं।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

कोलकाता निवासी श्रीमती शोभाजी जैन बजाज की स्मृति में 51000/- रुपये साहित्य की कीमत कम करने हेतु प्राप्त हुये।

वार्षिकोत्सव संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर का 21वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 31 जनवरी तक मनाया गया, जिसमें 170 तीर्थङ्कर मण्डल विधान का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्रीमती अनिता-अजितकुमार अनिकेतन जैन परिवार एवं श्रीमती वर्षा-नितिनकुमार जैन परिवार थे।

इस अवसर पर दोपहर में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में प्रवचनोपरांत शंका-समाधान और बच्चों द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। समापन दिवस के अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई।

कार्यक्रम के बीच में ही समयसार कहान शताब्दी महोत्सव वर्ष का मांगलिक आमंत्रण दिया गया। साथ ही अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा बन रहे श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के निर्माण कार्य का शुभारम्भ विधि-विधानपूर्वक हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जेवर द्वारा स्थानीय विद्वान श्री मनोजजी जैन, ब्र. श्रेणिकजी जैन, पण्डित विरागजी शास्त्री एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ स्थित श्री पंचबालयति मंदिर में श्री कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट पंच बालयति मंदिर, मुमुक्षु मण्डल एवं श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी गोठ के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक 3 से 7 फरवरी तक संपन्न हुआ, जिसमें 170 तीर्थङ्कर मंडल विधान किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर द्वारा प्रवचनों और संगीतमय पौराणिक कथाओं का लाभ मिला। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ द्वारा संपन्न हुये। समस्त कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं पण्डित अनिलजी पाटोदी बड़नगर के निर्देशन में संपन्न हुये।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2021

प्रति,